आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 340 ARYA SABHA MAURITIUS 3rd Sept. to 10th Sept. 2016

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

मंगल गान

श्रीमती प्रेमिला तूफ़ानी, शास्त्री

ओं भूर्भुवः स्वः । कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ।

प्रस्तुत मंत्र यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय का चौथा मंत्र है। यह सामवेदीय भी है। इस मन्त्र के ऋषि वामदेव है। देवता इन्द्र है और छन्द गायत्री। हर कोई मंगल कार्य करने वा संस्कार करने के पश्चात् हम यह मंगलगान गाते हैं। मंगलकारिणी अवस्था में लोगों के कल्याण की कामना के लिए मंगलगान गाना महर्षि दयानन्द का आदेश है।

साधक मंगलगान गाते हुए प्रार्थना करता है। हे ईश्वर ! किस रीति से मैं आपको सम्मुख पाऊँ। हे मार्गदर्शक! आप ही बताइये कि किस ढंग को अपनाकर मैं आपको जान सकूँ।

'ओं भूर्भुवः स्वः' – हे तीनों लोकों के स्वामी मैं आपको वरण करता हूँ। मैं आपकी भक्ति में लीन आपको जानना चाहता हूँ। मेरे सम्मुख आकर मेरी भक्ति को साकार कर दीजिए। **(कया)** भक्त पूछता है कि किस रीति से मैं आपको पा सकूँ। भक्त भगवान् से मन-ही-मन बातें करता है। वह एकाग्रह होता हुआ ध्यान करता है। ईश्वर को सम्मुख पाने की चाह ने उसे झकझोर दिया है। प्रश्न यह उठता है, क्या ईश्वर को सम्मुख पाना आसान है। स्वाभाविक बात तो नहीं। ईश्वर निराकार हैं। स्वयंभू हैं। अपने-आप को सूक्ष्म रूप में ढालकर कर्म करते हैं। संसार के रचयिता मानव को काल-चक्र में घुमाते रहते हैं और मानव उस घड़ी का इन्तज़ार करता है कि एक-न-एक दिन उस परम शक्ति को सामने पा लेगा। वह उतावला होता है कि कब वे सामने आयेंगे।

ईश्वर को जानने की उत्सुकता साधक के मन में इस प्रकार बढ़ती जा रही है कि वह शीघ्र अपने प्रभु का कृपा-भाजन बनना चाहता है। भोला भक्त नहीं जानता कि ईश्वर सृष्टि के कण-कण में बसे हैं। मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में बावले की तरह ढूँढ़ता रहता है। प्रश्न उठता है कि भक्त की जिज्ञासा कैसे दूर की जाय। मंत्र द्वारा प्रभु ने दर्शाया है कि हे भक्त ! तू कर्म करता जा। विद्वान् बनकर ज्ञान को प्राप्त कर। अपनी बुद्धि को श्रेष्ठ बना। ज्ञान रूपी सागर में डूबकर भक्तिमार्ग पर चल, उसी मार्ग पर चलते हुए तेरी जिज्ञासा शान्त होगी। विद्या प्राप्तकर, नियमों का पालन कर, कंटीले रास्ते पर चलता हुआ अपनी चरम सीमा को पार कर तभी मेरी पहचान होगी। मैं तुझ ही में समाया हुआ हूँ। तेरे हृदय में छिपा हुआ हूँ। मन के अन्दर झाँक ले, मुझे पा जायेगा।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

हवन-कुण्ड कैसा हो?

श्रावणी मास के दौरान सभी शाखा-समाजों एवं सहस्त्रों घरों में विशेष हवन-यज्ञ हुआ। इस अवसर पर हमें बहुत से यज्ञों में सम्मिलित होने का निमन्त्रण मिला। कई स्थानों पर हमने देखा कि हवन-कुण्डों का परिमाण उचित न होने के कारण यज्ञाहुतियाँ ठीक से अग्नि में दी न जा सकीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज हवन-कुण्ड के परिमाण के सम्बन्ध में अपने अमर ग्रन्थ– 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखते हैं – 'जो लक्ष आहुति करनी हों तो चार-चार हाथ का चारों ओर समचौरस चौकोण कुण्ड ऊपर और उतना ही गहरा और चतुर्थांश नीचे अर्थात् तले में एक हाथ चौकोण लम्बा चौड़ा रहे। इसी प्रकार जितनी आहुति करनी हों, उतना ही गहरा चौड़ा कुण्ड बनाना। .... यदि कुण्ड में ढाई हज़ार आहुति-मोहनभोग, खीर और ढाई हज़ार घृत की देवे तो दो ही हाथ का चौड़ा गहरा समचौरस .... और इन कुण्डों में पन्द्रह अंगुल की मेखला अर्थात् पाँच-पाँच अंगुल की ऊँची तीन बनावें ।'

श्रद्धालु यजमानों से निवेदन है कि जिस तरह आप यज्ञ के लिए अच्छी समिधाएँ, उत्तम सामग्री और शुद्ध घृत का प्रबन्ध करते हैं, उसी प्रकार अपने हवन-कुण्ड के परिमाण पर भी यथोचित ध्यान दें, ताकि आपकी आहुतियाँ ठीक से यज्ञाग्नि को समर्पित हो सकें ।

सेवा में सूचित हो कि भारत से खरीदे गए उचित कुण्ड उपलब्ध हैं। दाम है मात्र ग्यारह सौ रुपये। यदि आप चाहें कि कुण्ड आपके घर अथवा समाज तक पहुँचाया जाए तो उसका दाम साढ़े बारह सौ रुपये होगा। हर एक आर्यसमाज में और प्रत्येक आर्य परिवार में एक उपयुक्त हवन-कुण्ड का होना बहुत आवश्यक है। हवन-कुण्ड निम्न स्थानों से प्राप्त किये जा सकते हैं –

(१) आर्य भवन पोर्ट लुई, फ़ोन नवम्बर 2122730
(२) पाय आर्य समाज, फ़ोन नं० 2861159
(३) त्रिओले तीन बुतिक आर्य समाज, फ़ोन नं० 57646121
(४) गुडलैण्ड्स आर्य समाज,फ़ोन नं० 2835832
(५) नूवेल दे कुवर्त आर्य समाज, फ़ोन नं० 57848103
(६) निर्धिन भवन आर्य समाज,क्यूर्पिप रोड, फ़ोन नं० 57658022
(७) माहेवर्ग आर्य समाज,फ़ोन नं०57509343
(८) सुयाक आर्य समाज,फ़ोन नं०57639174

फ़ोन से सम्पर्क करके किसी भी शनिवार अथवा रविवार को नौ से बारह बजे के बीच आप कुण्ड प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ० उदय नारायण गंगू

सम्पादकीय

दाम्पत्य जीवन

ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते हुए जब युवक-युवतियाँ अपने शुभ गुण-कर्मों, व्यवहारों और अनुभवों को प्रदर्शित करने लगते हैं, वे ज्ञान-विज्ञान में निपुण हो जाते हैं तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर जीने के योग्य हो जाते हैं, तब माता-पिता पंचों के मध्य में उनका विवाह संस्कार करवाते हैं। उस श्रेष्ठ संस्कार के बाद वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर जाते हैं।

गृहस्थाश्रम में कदम रखते ही वर-वधू में पति-पत्नी का गहरा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, उन दोनों के जोड़े को दम्पति कहा जाता है। दम्पति के आपसी प्रेम-सहयोग, तप-त्याग और पुरुषार्थ द्वारा जब उनका परिवार समृद्ध बनता है, तथा उनका जीवनकाल गुज़रता जाता है तब उस काल को दाम्पत्य जीवन कहते हैं।

दाम्पत्य जीवन सुचारु रूप से व्यतीत करने के लिए पूरे अनुभव की आवश्यकता होती है, ज्ञान और अनुभव प्राप्त किए बिना विवाह के बन्धन में बन्ध जाना नादानी है। इसीलिए विवाह से पूर्व वर-वधू दोनों का वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त अनुभव प्राप्त करना अति आवश्यक समझा जाता है। अन्यथा अज्ञानता के कारण पति-पत्नी में कई प्रकार के दोष आने लगते हैं, उनके सोच-विचार और रहन-सहन में असमानता होने से उनका वैवाहिक जीवन दुष्कर हो जाता है। परिवार में विद्रोह पैदा होने से पति-पत्नी एक छत के तले नहीं रह पाते हैं।

आज यह देखा जाता है कि ज्ञान, अनुभव और सुसंस्कार के अभाव में कितने दम्पति व्याकुल हैं। उनके वैवाहिक जीवन में गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, उन समस्याओं को सुलझाने में वे असमर्थ दिखते हैं। उनकी असमर्थता के कारण दोनों में मतभेद पैदा हो जाता है, एक दूसरे के दोष निकालते हुए अक्सर परिवार में झगड़ा होता रहता है और शीघ्र ही उनका दाम्पत्य जीवन दुखमय हो जाता है।

विवाह-विच्छेद की नौबत आ जाती है । तलाक़ के बाद गृहस्थाश्रम में दरार पैदा हो जाती है। पति-पत्नी में वियोग उत्पन्न होता है। उनके हँसते-खिलते बच्चों की ज़िन्दगी दुखदायी हो जाती है। उनके परिवार में दुख के बादल मँडराने लगते हैं। उनके सुखद और समृद्ध परिवार देखते-देखते ही बिखर जाते हैं।

आजकल हमारे देश में तलाक़ लेने वाले नासमझ दम्पतियों की संख्य बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है। उन अबोध दम्पतियों के कारण कई पारिवारिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। बड़े- बड़े शानदार महलों के भीतर दाम्पत्य-प्रेम नहीं, जिन कारणों से उनका जीवन व्याकुलता से भरा हुआ है और वे तनावपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कोर्ट-कचहरी के झमेले में अपनी मेहनत की कमाई हुई सम्पति बरबाद कर रहे हैं, फिर भी उनका पुनः क़ायम नहीं हो पाता है।

आज की ऐसी गम्भीर परिस्थिति में हमें अपने युवावर्ग को ब्रह्मचर्य अवस्था ही में वैवाहिक जीवन की जानकारी प्रदान करनी चाहिए। उन्हें गृहस्थाश्रम के महत्त्व पर पर्याप्त ज्ञान देकर विवाह के बन्धन में बाँधना चाहिए, तभी वे दाम्पत्य प्रेम, सहयोग, एकता और अनुभव के आधार पर सुगमतापूर्वक अपना वैवाहिक जीवन व्यतीत कर सकेंगे। ऐसी व्यवस्था करने पर तलाक़ लेने की समस्या घट सकेगी और समृद्ध एवं संगठित परिवार गठित होगा।

समय की यही पुकार है कि हम अपने युवावर्ग को व्रतधारी तथा श्रेष्ठ गृहस्वामी बनाने की योजना बनाएँ, ताकि वे अपने दाम्पत्य जीवन को दीर्घकाल तक निभा सकें। यह ध्यान रहे कि विवाह संस्कार तो वर-वधू का भावी जीवन उन्नत बनाने के लिए निर्धारित है। इस सर्वश्रेष्ठ संस्कार के बाद अपने वैवाहिक जीवन को बचाए रखना हर एक पति-पत्नी का उत्तरदायित्व है। अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे तो समृद्धिशील होंगे और विवाह-विच्छेद का ख्याल करेंगे तो पतनावस्था में होंगे। बड़े सोच-विचार के साथ निर्णय लेना हर एक दम्पति का कर्त्तव्य है।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय स्तर पर पूर्णाहुति

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

शनिवार २७ अगस्त २०१६ आर्य सभा मोरिशस के इतिहास में स्मरणीय रहेगा क्योंकि उसी दिन माहेवर्ग आर्य मंदिर में ५१ वाँ श्रावणी उत्सर्जन हुआ था। मंच पर आसीन्न थे दो आचार्य जो भारत से आए हुए थे एक आचार्य धनन्जय और दूसरा आचार्य जितेन्द्र जी ।

माहेवर्ग आर्य मंदिर खचा-खच भरा था। आर्य पुरोहित मण्डल के लगभग ४० पुरोहित-पुरोहिताओं की देख-रेख में २० कुण्डों में यज्ञ सम्पन्न हुआ। पंडित यश्वन्तलाल चुड़ामणि आर्य पुरोहित मंडल के प्रधान की अध्यक्षता में सुचारू रूप से यज्ञ समाप्त हुआ।

मौके पर श्री हिमेश और मण्डली तथा विशाल मंग्रू द्वारा सुन्दर भजन हुए जिनसे पूरा हॉल गूँज उठा। आरम्भ में ही माहेवर्ग आर्यसमाज के प्रधान श्री धरम गंगू ने सभी उपस्थित जनों का हार्दिक स्वागत किया और तुरन्त वेद प्रचार समिति के प्रधान भाई बालचन्द जी तानाकूर ने अपना संदेश दिया जिसके दौरान श्रावणी महोत्सव के महत्व पर प्रकाश डाला।

इन महानुभावों के संदेश लोगों को सुनने में आए – श्री रामधनी, डॉ० उदयनारायण गंगू, पं० चुड़ामणि और आचार्य धनन्जय।

सभा मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम ने बखूबी कार्यों का संचालन किया और अन्त में ग्राँ पोर ज़िला परिषद के प्रधान श्री सोमना ने सभी के सहयोग एवं सहायता तथा उपस्थिति के लिए धन्यवाद समर्पन किया।

अपने-अपने घर वापस होने से पहले सभी को महाप्रसाद बाँटा गया।

ज़िला स्तर पर पूर्णाहुति

रविवार दि० २८ अगस्त २०१६ को ग्राँबे आर्यसमाज एवं महिला समाज ने आर्य सभा के तत्वावधान में एवं रिव्येर जु राम्पार आर्य ज़िला परिषद के सहयोग से श्रावणी यज्ञ की पूर्णाहुति एवं नये मंदिर के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया था।

उसमें भाग लेने के लिए आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, सभा के महामंत्री सत्यदेव प्रीतम तथा अन्तरंग सदस्य (१) हरिदेव रामधनी, (२) शेखर रामधनी (३) श्रीमती सती रामफल और श्रीमती पूणम तिलकधारी और श्री विवेकानन्द लोचन उपस्थित थे।

चुनाव क्षेत्र नं० ६ के सांसद संगीत फावदार और सरकार के मंत्री माननीय आसीत गंगा ने उपस्थिति देकर लघु संदेश दिये। दोनों जनता के प्रतिनिधियों ने बारी बारी से आर्य सभा द्वारा किये जा रहे अच्छे कार्यों की सशहना की और आशा प्रकट की कि आर्य सभा सामाजिक कमज़ोरियों को दूर करने में और कुछ करे।

ग्राँ बे आर्य समाज के मंत्री ने बहुत थोड़े शब्दों में अपने समाज का इतिहास रखा और बताया कि भविष्य में समाज की क्या योजना है।

आरम्भ में पुरोहित-पुरोहिताओं द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ और बीच-बीच में कालियाचेटी परिवार के सदस्यों द्वारा भजनों का सुन्दर प्रोग्राम पेश किया गया।

सभी दृष्टि से कार्य अति सफल रहा।

समाज के चार वर्ण

लेखक : देवनारायण कोन्हाय, रिव्येर-दे-जाँगी, तयाक

स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं कि चार वर्ण हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। पाठक गण, ये चारों एक देश और एक समाज के चार खम्भे हैं। इन चारों को एक समान महत्व देकर एक देश या समाज को प्रगतिशील बनाना चाहिए तब कहीं जाकर समाज और देश की प्रगति होगी। इन चारों को अपने-अपने कार्य सौंपे गये हैं।

ब्राह्मण के लिए १५ कर्म और गुण हैं, जो सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में विस्तार पूर्वक समझाये गये हैं। ब्राह्मण का धर्म है वेदों को पढ़ना, पढ़ाना, उपदेश देना, विद्या-दान करना, जनता को शिक्षित करना, दान लेना, दान देना, मीठी वाणी से लोगों को सम्बोधित करना, सत्य मन और सत्य भावनाओं से लोगों की सेवा करना आदि।

क्षत्रिय के कर्म हैं – युद्ध करना, देश की रक्षा करना, एक होकर भी सौ गैर सिपाही शत्रुओं से लड़ना हो तो प्राणों को हथेली में लेकर लड़ना होगा। यह एक वीर सिपाही का कर्त्तव्य है। देश की सेवा और जनता को बचाना उसका धर्म है।

वैश्य के कर्त्तव्य – गाय आदि पशु पालन करना, व्यापार करना, दुकान चलाना, एक देश की आय में वृद्धि करना। देश की जनता में उचित भाव से अपना काम करना, काला बाज़ार न करना आदि।

शूद्र का कर्म है – उचित प्रकार से तीनों वर्णों की सेवा करना। शूद्र अपने हुनरों के द्वारा चारों वर्णों की आवश्यकताओं को पूरा करके समाज में संतुलन स्थापित करता है। शूद्र वर्ण की सेवा के बिना समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती। वह देश के पर्यावरण को शुद्ध रखता है।

चारों वर्णों के कर्त्तव्य सत्यार्थ प्रकाश में विस्तार पूर्वक बताये गये हैं। यदि एक देश में चारों वर्ण अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार काम करें, नियम-पूर्वक और उचित ढंग से अपने कर्त्तव्यों का पालन करें तो संसार में सभी लोग सुख और शान्ति से जी पायेंगे।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

गुणाः पूजास्थानं, गुणिषू न च लिंगं न च वयः

श्रीमती डा० चेतना शर्मा बद्री

गुणियों का सम्मान गुणों के कारण ही होता है, स्त्री पुरुष का भेद उम्र के कारण नहीं। यदि मनुष्यों में गुण होते हैं, तो उनका प्रकाश स्वयं हो जाता है। मानव द्वारा गुणों को ग्रहण करना स्वाभाविक होता है। जब वह सद्गुणों को आत्मसात् कर लेता है तब वह गुणों का पारखी बन जाता है। सब उसे श्रेष्ठ अर्थात् नीर-क्षीर का विवेक रखने वाले हंस के समान मानने लगते हैं। अपने इस एक गुण के कारण वह संसार के अन्य जीव-जंतुओं से अलग होता है।

एक बार रामकृष्ण परमहंस ने कहा था कि मक्खियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक शहद की मक्खियाँ, जो शहद के अतिरिक्त और कुछ नहीं खातीं और कहीं नहीं बैठतीं। दूसरी साधारण मक्खियाँ होती हैं, जो शहद पर भी बैठती हैं और यदि कोई सड़ता हुआ घाव दिखाई दे, तब शहद को छोड़कर उसपर भी जाकर बैठ जाती हैं। मक्खियों का उदाहरण मनुष्यों पर सही बैठता है। गुणग्राही मनुष्य शहद की मक्खियों के जैसा शहद अर्थात् अच्छाई के ही पक्षधर होते हैं।

इस प्रकार के मनुष्य प्रत्येक स्थान पर कुछ-न-कुछ शुभ या अच्छा ढूँढ़ ही लेते हैं अर्थात् ऐसे मानव गन्दगी में से भी अपने लिए अच्छाई खोज ही लेते हैं। गन्दगी कितनी भी क्यों न हो उसमें से हीरे निकालना जैसे समझदारी मानी जाती है, उसी प्रकार पारखी मनुष्य भी अपना हित साध ही लेते हैं। इस के लिए उन्हें कोई विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं होती। उनके स्वभाव में ये विशेषता होती है, जो उनकी दृढ़ता का परिचय देती है।

ऐसे मनुष्यों को केवल सज्जनों का संग ही रास आता है, दुर्जनों का संग इन्हें नहीं भाता। इनका समय स्वाध्याय और सत्कर्मों में ही व्यतीत होता है। इनके लिए भौतिक उन्नति से अधिक आत्मोन्नति आवश्यक होती है। रात-दिन इसके बारे में ही सोचते हैं और अपनी धुन में ही रहते हैं। इस प्रकार साधु स्वभाव से ये संसार के लिए एक उदाहरण बन जाते हैं। दूसरों का मार्ग-दर्शन करते हैं। सदैव ही समाज में सम्मानीय माने जाते हैं, परन्तु दुष्ट प्रकृति के लोग इनसे अप्रसन्न रहते हैं। इसके विपरीत दूसरे प्रकार के मनुष्य साधारण मक्खियों के जैसे इधर-उधर प्रत्येक स्थान पर भिनभिनाते रहते हैं। जहाँ कहीं भी इन्हें अपना लाभ दिखाई देता है, वहीं के हो जाते हैं। शायद इन जैसे मनुष्यों के कारण ही ये कहावत प्रचलित है – **जहाँ देखी तवा-परात, वहाँ बिताई सारी रात।** अर्थात् जहाँ इनकी स्वार्थ-पूर्ति होती है, ये वहीं के होकर रह जाते हैं। किसी के हित-अहित के बारे में ये नहीं सोचते और किसी से इन्हें कुछ लेना-देना नहीं होता है। ये अच्छाई की ओर जाते अवश्य हैं और अच्छा बनना भी चाहते हैं, परन्तु जहाँ अधिक लाभ दिखाई देता है उस ओर आकर्षित होकर अच्छाई से दूर हो जाते हैं और मुँह मोड़ लेते हैं। अच्छाई का चोला पहनकर ग़लत कार्य करने में भी इन्हें कोई परहेज़ नहीं होता है। अपनी सफ़ेदपोशी बनाए रखने के लिए अनेक प्रकार के षड़यंत्र रचते हैं। फिर चाहे नुकसान इनका हो या किसी दूसरे का, कोई परवाह नहीं करते।

इस प्रकार के मनुष्य अपने भौतिक स्वार्थों को अधिक महत्व देते हैं। कभी भी किसी को भी धोखा दे सकते हैं, छल कर सकते हैं। ये अपने स्वार्थ में इस प्रकार लीन हो जाते हैं कि दूसरे सीधे-सादे लोग इनके बिछाए जाल में आ जाते हैं और जब उन्हें एहसास होता है तब बहुत देर हो जाती है।

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकासन्त्येव ते स्वयम्।
न ही कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाज्यते।
गुणानर्चन्ति जन्तूनां न जातिं केवल क्वचित्।
स्फटिकं भाजनं भग्नं काकिण्यापि न गृह्यते ।।

लोग जन्तुओं के गुणों का सम्मान करते हैं, केवल जाति का कहीं भी नहीं। कस्तूरी की सुगन्ध को शपथ से सिद्ध नहीं किया जा सकता है। टूटा हुआ स्फटिक बरतन कौड़ियों के दाम भी नहीं लिया जाता।

मनुष्य को अपने भौतिक स्वार्थ को छोड़कर विचारशील, मननशील बनना चाहिए, ताकि कोई भी उसे आसानी से न छल सके। अपनी ही आस्तीन के साँपों के सावधान रहना चाहिए एवं शहद की मक्खी के समान अपने लक्ष्य का ध्यान रखना चाहिए। सद्गुणों का ग्राही होना चाहिए। अपने जीवन के मूल्यों को नहीं त्यागना चाहिए, अपने आपको सन्तापों न दुर्गुणों से बचाना चाहिए, क्योंकि **गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते**।

पृष्ठ १ का शेष भाग

मंगल गान

मंत्र में **'शचिष्ठ्या'** शब्द बुद्धियुक्त व्यवहार के लिए है। उसी से ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं। **(कः)** कौन, वही परमात्मा, जो हमारे रक्षक हैं। **(सत्यः)** सत्य स्वरूप हैं। **(मदानां)** अनेक प्रकार से आनन्द प्राप्त कराते हैं। मानव अपने को बेबस, बेसाहारा महसूस करता है। जो जीवन वह व्यतीत करता है झूठा, फीका-सा लगता है। वह जानता है कि अन्धकार में पड़ा रहेगा तो कुछ भी नहीं पा सकता। वहाँ से निकलने के लिए भक्तिमार्ग को अपनाकर अपना जीवन सुधारना चाहता है। ईश्वर को सम्मुख जानने के लिए उस प्रकार तड़प रहा है, जैसे बच्चा माँ को सामने न पाकर बिलख-बिलख कर रो उठता है। उसका रोदन रूप देखा नहीं जाता। वैसे ही उस भक्त की तड़प देखने लायक नहीं होती । ऐसी विरह की अवस्था कौन समझ सकता है? केवल एक वही परमात्मा, जो दर्शन देकर भक्त के वैराग्य पूर्ण जीवन में आनन्द ला सकते हैं।

'दृढ़ाचित्त' परमात्मा अपनी शक्ति से मानव के मन में विश्वास जगाते हैं। वे संकेत करते जाते हैं। किसी न किसी रूप में सामने आकर मार्गदर्शन करते हैं। कुपथ से निकालकर सुपथ पर ले जाते हैं। जब भक्त के सामने आते हैं, भक्त को पता नहीं होता सद् विद्या या प्रेरणा के रूप में वे हमारे हृदय में प्रकट होते हैं। प्रेरणा और सद्ज्ञान तो ईश्वर की ही देन है।

अतः यज्ञ के पश्चात् पुरोहित एवं यजमानों को मंगलगान द्वारा परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना करना अत्यावश्यक है।

पंडिता तारामाती भामा जी के प्रति श्रद्धांजलि

आजन्म ब्रह्मचारिणी पंडिता तारामती भामा जी इस संसार में अब न रहीं। वे वर्षों से पुरोहिताई का कार्य बड़ी लगन के साथ करती थीं। उनका कार्य प्रशंसनीय था। वे स्वभाव से शान्त, मिलनसार और बहुत अच्छी थीं। वे समाज की एक कर्मठ सेविका थीं। वे मोका प्रान्त के सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सदा अपना सहयोग देती थीं। मैं पुरोहित-पुरोहिताओं और आर्य सदस्यों की ओर से पंडिता तारामती भामा जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

पंडिता अन्जनी महिपत

Science Corner

September 2016 is a month rich in astronomical events.

On the 1st September there will be an Annular Solar Eclipse visible but unfortunately due to our geographical location which will be a bit farther away from the central path (Umbra) of the eclipse, we in Mauritius will be able to observe only a partial solar eclipse and not the annular one to be seen from Madagascar, Reunion Island and some African countries falling within the umbra. The Moon will be at the ascending node in its orbit around the Earth.

On the 16th of the same month at the descending node of the Moon, a penumbral Lunar Eclipse will occur.

On the 22nd of September at 18.21 h, Earth will reach the point of second equinox of the year in its orbit around the Sun where the Sun will appear to cross the equator moving further Southward.

What is an Eclipse?

An eclipse is an astronomical event where one celestial body partially or completely(totally)covers another celestial object. This happens when the eclipsing body comes between the observer and the eclipsed object, that is, when they are aligned. In our context, the three celestial objects concerned are the Sun, Earth and the Moon. As the Moon goes round the Earth which is itself orbiting the Sun, the points where the plane of the orbit of the Moon crosses that of the Earth(Ecliptic) called the ascending and the descending nodes of the Moon cause eclipses to occur. There are two main types of eclipses. The Solar and the Lunar Eclipses.

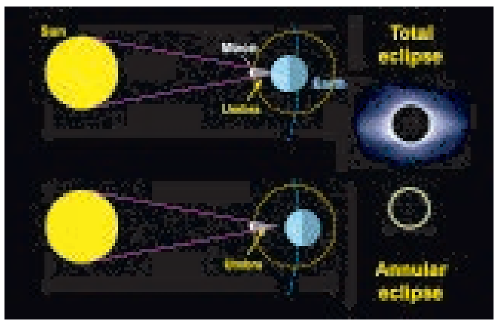

Solar Eclipse. Solar eclipses occur during New Moon(Amavasya) when the Moon moves between the Sun and the Earth and all the three are aligned. The Solar eclipse may be total, partial or annular.

Annular Solar Eclipse. The Annular Solar Eclipse happens when the New Moon is at its apogee , that is , at its furthest point in its orbit around the Earth and when the disc of the Moon does not completely covers the Sun's disc leaving the Sun's visible outer edges to form "a ring of fire" or annulus around the Moon.

Lunar Eclipse. Lunar eclipses occur during Full Moon(Poornima) when the Earth comes in between the Sun and the Moon in alignment. There are three types of lunar eclipses; total, partial and penumbral. The total lunar eclipse occurs when the Earth Umbra- central dark shadow completely obscures the visible surface of the Moon. **Only an eclipse of the Moon can be viewed with the naked eye without any problem.**

From time immemorial, due to ignorance on the occurrences of eclipses and even today with all the advancement made through scientific research "messengers of Doom" are still spreading fears among people who would rather embrace fear than knowledge. The Vedas say, "Only ignorant people are perplexed by eclipses. It is high time to demolish these superstitious beliefs and move towards rational and progress.

A word of safety for viewing Solar Eclipses.

NEVER LOOK DIRECTLY AT THE SUN DURING A SOLAR ECLIPSE (TOTAL, PARTIAL OR ANNULAR) WITHOUT PROPER EYE PROTECTION. YOU CAN SERIOUSLY DAMAGE YOUR EYES OR EVEN GO BLIND. USE A SUN FILTER, PROTECTIVE ECLIPSE GLASSES OR PROJECT AN IMAGE OF THE SUN USING A PINHOLE CAMERA.

Time for observing the Annular Eclipse on the 1st Sept ember 2016 in Mauritius

Global Type : Annular Solar Eclipse
Mauritius : Partial Solar Eclipse
Eclipse begins: Thursday 1st September 2016 @ 12.27h
Maximum : Thursday 1st September 2016 @ 14.23h

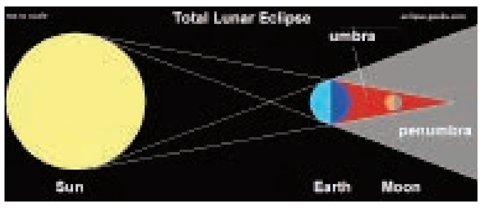

Ends : Thursday 1st September2016 @ 15.44h
Duration : 3h 17m

Weather permitting a team from the Astronomical Society of Mauritius will be present at the Flic en Flac Public Beach on 1st September 2016 as from 11.00 am with their telescopes fitted with a sun filter to safely observe the eclipse.

Ravindrasingh Gowd

LES PRINCIPES FONDAMENTAUX DE L'EPANOUISSEMENT TOTAL DE LA VIE ESTUDIANTINE.

cont. from last issue

Il y a quatre sortes de Prānāyāma :

Pendant toute la durée de cet exercice il faut se concentrer sur la syllabe 'Om'.

(1) Tout d'abord il faut rejeter ou expirer tout l'air de son poumon. On arrête le souffle ou la respiration aussi longtemps que possible. Lorsque l'on sent une gêne se produire, on inspire l'air lentement dans le poumon. Puis on reprend la respiration normale.

(2) Ici on inspire l'air à plein poumon, on arrête l'inspiration et on la maintient le plus longtemps possible. Lorsque l'on ne peut plus, on expire l'air lentement de son poumon et on reprend la respiration normale.

(3) Cet exercice consiste à arrêter le souffle à n'importe quel stade de la respiration et à le maintenir le plus longtemps possible. Lorsque l'on est à bout, on reprend lentement la respiration normale.

(4) Pendant cette action, le processus de la respiration est contrarié ou bloqué. Alors que l'inspiration n'est pas terminée, on l'interrompt pour expirer et vice-versa.

On peut le faire plusieurs fois d'un seul trait. (3 fois au moins et à augmenter graduellement jusqu'à un maximum de 21 fois)

En inversant ainsi la respiration, l'expiration et l'inspiration sont arrêtées tour à tour.

On peut répéter ces quatre exercices au moins trois fois le matin, et même dans l'après-midi si c'est possible, pour que le Prānāyāma soit complet et bénéfique à celui qui le pratique régulièrement et avec beaucoup de dévotion et de discipline.

Les bienfaits du Prānāyāma

1. Cette action purifie notre esprit, exalte notre âme, et **nous donne le pouvoir de discernement** et autres attitudes positives.

2. C'est très bénéfique pour notre santé. Cela améliore la circulation de notre sang avec l'apport de beaucoup d'oxygène, contribue au bon fonctionnement de notre cœur et active toutes les parties vitales de notre corps pour nous maintenir en parfaite santé et nous rendre vigoureux.

3. La pratique du Prānāyāma renforce notre mémoire, aide à faire épanouir notre compétence intellectuelle de sorte que l'on arrive à saisir ou à comprendre et à assimiler très facilement les sujets les plus compliqués et cela nous habilite à entreprendre avec succès les études supérieures.

Ainsi notre performance ira en s'améliorant de jour en jour et nous ouvrira la voie à une grande carrière ou une profession de nos rêves.

सूचना

पाठकों की सेवा में विदित हो कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के मन्तव्यों से सम्बन्धित विपुल वैदिक साहित्य ऋषि दयानन्द संस्थान के पुस्तकालय, पाई में उपलब्ध है।

पाठकों से निवेदन है कि वे सोमवार से शनिवार तक प्रातःकाल १०.०० बजे से ३.०० बजे के बीच Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles के 'श्रीमती कुलवन्ती झमन पुस्तकालय' से अध्ययनार्थ पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

१. देश-रत्न राजेन्द्रप्रसाद, *सेठ गोविन्ददास*
२. सुखी परिवार (परिवार सुखी कैसे हो), *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*
३. १८५७ के महान् क्रान्तिकारी, *कृपाकान्त झा*
४. 'सामाजिक और राजनीतिक ज्ञान' कम्युनिज़्म क्या है, *प्रगति प्रकाशन*
५. विचार बिन्दु, *अटल बिहारी वाजपेयी*
६. पाश्चात्य दर्शन (उत्तर - प्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत), *चन्द्रधर शर्मा*
७. एकत्व के मूल, *डॉ० शंकर दयाल शर्मा*
८. विहार का भूगोल (भारत देश और लोग), *अनिल कुमार*
९. क्रान्तिवीर पण्डित नरेन्द्र, *प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु*
१०. दयानन्द चरित, *देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय*
११. आये थे जब सुभाष.... हिम के आँचल में, *डॉ० हरीन्द्र श्रीवास्तव*
१२. गुरुदत्त लेखावली, *पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी एक०ए०*
१३. रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य भाग एक (१)
१४. रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य भाग दो (२)
१५. रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य भाग तीन (३)
१६. वीर सावरकर (भारत के अमर क्रांतिकारी), *डॉ० भवानसिंह राणा*
१७. प्रगति के परिदृश्य, *डॉ० शंकर दयाल शर्मा*
१८. महाकवि सोमदेव विरचित कथासरित्सागर
१९. कैसे करें बच्चों का विकास ?, *गीतिका गोयल*
२०. दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह, *महर्षि दयानन्द*
२१. महात्मा हंसराज, *श्री महात्मा खुशहाल चंद आनन्द*
२२. पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' व्यक्तित्व और कृतित्व, *नंद चतुर्वेदि*
२३. विवेकानन्द संचयन, *रामकृष्ण मठ नागपुर*
२४. पाश्चात्य दर्शन और सामाजिक अन्तविराध (थलेस से मार्क्स तक), *डॉ० रामविलास शर्मा*

Neermala Sookar
Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles

आर्ष गुरुकुल को दान

'ऋषि दयानन्द संस्थान' द्वारा संचालित पाई में स्थित 'आर्ष गुरुकुल' को निम्नलिखित दाताओं का सात्विक दान प्राप्त हुआ :–

१. स्वामी शिवशंकर लाचो - रु० ४,००० (चार हज़ार रुपये)
२. श्रीमती शशिबाला दुखन - रु० ४,००० (चार हज़ार रुपये)
३. पाई आर्य समाज - रु० १,३०० (एक हज़ार तीन सौ रुपये)
४. श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी - एक बोरा आटा और एक बोरा चावल
५. डॉ० विनोद कुमार मित्र - दस किलो गेहूँ का आटा

दाताओं को धन्यवाद ।

डॉ० उदय नारायण गंगू

आप के पत्र

आर्योदय का जुलाई अंक पढ़ा। श्री नरेन्द्र घूरा जी की फ्रेंच भाषा की मन्त्र-व्याख्या बड़ी लाभदायक रही। वेद के विचारों को फ्रेंच और अन्य भाषाओं में लोगों तक पहुँचाने से समाज को अधिक लाभ होता है।

डॉ० उदय नारायण गंगू जी का 'पति-पत्नी का सम्बन्ध' मार्मिक और विचारनीय है। आज की सामाजिक परिस्थिति, पारिवारिक दशा और आनेवाला कल, यह सब पति-पत्नी के सम्बन्ध पर टिका है।

श्री बालचन्द तानाकूर जी के 'युवावस्था' लेख में युवकों का यथा-कथन दृष्टिगोचर होता है।

श्रीमती शान्ति मोहाबीर जी का शोध-कार्य ज्ञानपूर्ण है। उन्होंने आर्यसमाज के पन्नों को हमारे सामने खोला है।

प्रो० सुदर्शन जगेसर जी की विदेश-यात्रा से यह ज्ञात होता है कि आज **'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्'** की भावना लुप्त हो रही है।

वानप्रस्थी विश्वदेव मुनि जी के उपनिषद्-ज्ञान को घर-घर पहुँचाने का प्रयास सराहनीय है।

पंडित बुद्धू जी का लेख प्रेरणाप्रद है। श्रावणी पर आचार्य मुकुनलाल जी का लेख शिक्षाप्रद है।

पंडिता अनीता छोटी

११ अगस्त २०१६ का 'आर्योदय' ज्ञानवर्द्धक है। 'साक्षात्कार' शीर्षक के अन्तर्गत डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी ने जहाँ आर्यसमाज द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को रेखांकित किया है, वहीं आर्यसभा के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम, 'आर्य रत्न', ने बताया है कि बीस जुलाई से लेकर १९ अगस्त तक आर्य सभा के सभी पुरोहितों ने वेद-पाठ और यज्ञ करके मॉरीशस के वातावरण को सुगन्धित कर दिया है। इस लेख से आर्य सभा के पुरोहित-पुरोहिताओं के कार्यों पर प्रकाश पड़ा है। पृष्ठ २ में प्रकाशित श्रीमती शशिबाला दुखन का लेख – 'पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के निबन्धों में दार्शनिक निरुपण' शोध-प्रेमियों के लिए बहुत ही लाभदायक है । दर्शन क्या है, इस पर लेखिका ने बड़े सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया है ।

पंडिता पुष्पा बुझावन

Kriyaatmak Yog Series (Maharshi Patanjali's Yoga Darshanam)

Practical applications of Yoga in daily life

Besides the spiritual aspect and objectives, the aphorisms (*sutras*) indicates that the practical applications in our day-to-day life also leads to 100% success in what we may be doing, be it studies, sports, any type of work be it for pay or any other form of reward, selfless service (*nishkāma sevā*) …etc.

2.0 Sādhana Pāda

2.21 Yama-niyama-āsana-pranāyāma-pratyāhāra-dhāranā-dhyāna-samādhayo-ashtāgani

The eight steps to yoga are: (1) **Yama:** Social discipline; (2) **Niyama:** Personal discipline; (3) **Asanas :** Body posture; (4) **Pranāyama :** Breath control; (5) **Pratyāhara :** introversion of the senses; (6) **Dhārana :** Concentration & cultivating inner awareness; (7) **Dhyāna:** Meditation; (8) Samādhi: Communion.

2.30 Ahimsā-satya-asteya-brahmacharya-aparigraha-yamāh

The five components of Yama are: (1) **Ahimsā :** Non-violence; (2) **Satya:** Truth; (3) **Asteya:** Non-stealing; (4) **Brahmacharya:** Celibacy, study of the Vedas & allied scriptures; (5) Aparigraha: Non- hoarding / non-accumulation of superfluous things.

2.32 Saucha-santosha-tapah-swādhyāya-ishvarapranidhānāni niyamāh

The five components of Niyama are: (1) **Saucha:** Purity / cleanliness; (2) **Santosha:** Contentment / Fulfilment; (3) **Tapah:** Austerity / Willpower; (4) **Swādhyāya:** Celibacy, study of the Vedas & allied scriptures;(5) **Ishvarapranidhānāna:** Submission to God.

- Yama - Niyama are either observed or violated through our actions (*karma*).
- Actions can take place at the level of either (i) thoughts (*mana*), (ii) speech (*vāni*) and (iii) physical doings (*sharira*) or a combination of any two or all three.
- Actions also take place through either (i) personal doings (*krita*), (ii) instructing some to do something (*kārita*) and (iii) by endorsing the doings of another person (*anumodita*) or a combination of any two or all three.

Adherence to all the rules of social and personal discipline contribute to progress on the eight-fold programme of Yoga. Violation of any one of them at the level of mana, vāni and / or sharira and by way of krita, kārita and /or anumodita is detrimental to Yoga practice.

2.35 Ahimsā pratishthāyāma tattsannidhau vairatyāgah

Non-violence implies giving up greed (*lobha*), attachment (*moha*) and anger (*krodha*).
- Greed for money, for satisfying sense organs (taste…etc.) leads to irrational exploitation of resources (hoarding / black marketing…), ill-treatment of people by people (physical & sexual abuse / mental torture…), killing (for the sake of trade / crime…).
- Anger disturbs the physical and mental balance of the person; outbursts lead to violent behaviours.
- Attachment stimulates arrogance… ego… obsession… self-centredness (me, mine & myself). In spite of being witness that no material things accompany us at death, we unduly cling to things till the last minute of our lives. Trespass of others' rights to favour our kith and kin… is often a source of obsession… injustice… corruption… crimes.

We shall adopt non-violence only when we realise the causes and outcomes of violence… through previous personal experiences and / or witness occurrences around us. Further acknowledging God or the laws of nature or the super force as the universal creator, father, mother, ruler… will foster love, compassion, impartiality, solidarity, brotherhood, self-control, …humane qualities.

Ahimsā empowers us with intelligence to view all living creatures as souls (*ātmavat vyavahār …mitraysa chakshushāmahe*); be virtuous at all times; be at peace, hopeful and enthusiastic; think, speak and do things whole-heartedly; spread social harmony and happiness.

2.36 Satya pratishthāyāma kriyāphalāshrayatvam

Truth is known through observation, inference and authority. *To be truthful = to speak, write of something and believe it to be as it really is, free from doubt.* All should be ever ready to accept truth and shun untruth. Truth should be told in a courteous manner (*priti purvaka dharmanusār*), i.e. not hurt others.

The ways and means to be truthful are: reading of Vedas and ancillary inspirational literature; keep company of honest persons; allocate time daily for some sincere introspection of our activities; prayer; repentance, self-reprimand and will power to give up untruth.

'To be true to oneself' nurtures self-assurance, fearlessness, serenity, positivity, aptitude to rise after each failure and to counter evil by goodness. Honesty leads to worldly and spiritual bliss.

2.37 Asteya pratishthāyāma sarvaratna-upasthānam

Steya means to steal and *Asteya*, non-stealing.

Stealing is committed by thinking about, ordering and /or doing actions like taking something without the permission of the owner, snatching, cheating, false pretences …etc. Greed, excessive affection, laziness are breeding grounds for robbery. Intelligent and virtuous people promote charity, compassion, purity of mind-body-spirit, honest initiatives to serve the poor, spread social justice and happiness.

Once we accept God as *sarvavyāpaka* (Omnipresent, present everywhere at all times), *sarvajna* (Omniscient, All-knowledgeable), *nyāyakāri* (All-justice) we shall integrate *asteya* in our life style.

Asteya prompts man to treat others as he would like to be treated, to accept the laws of nature, to be human in his dealings, to refrain from deeds that would otherwise hurt others. We shall realise our material and spiritual wealth when we shall reduce our wants and prioritise on needs. There is enough in this universe to satisfy the needs-of-all NOT the greed-of-a-few.

2.38 Brahmacharya pratishthāyāma virya lābhah

Focus of the mind ease the process of controlling the sense, specially food and drinks tend to be more *sātvika* (simple & nutritive), abstain from *rājsika* (sharp & exciting) and *tāmsika* (intoxicating).

Brahmacharya is also abstinence, i.e. the preservation of life force that goes towards our physical, mental / moral / spiritual development. It liberates the mind-body-spirit from indulging in fleeting pleasures such as intoxication.

Abstinence and fidelity (Be faithful) among couples are reckoned by the World Health Organisation as the 1st and 2nd (A & B's) most effective and efficient saviours from HIV/AIDS and other sexually transmissible diseases.

Brahmacharya allows judicious use of vital energy to acquire knowledge and dispel ignorance; to strike the right balance in life; to be true and sincere to the self; to cultivate fearless, impartiality, tolerance, self-control; to regularly practice exercises to grow in physical and mental strength as well as develop resilience to face adversity (disease, debility …etc.)

It is also acquiring true knowledge about the Almighty (*Ishvara*), souls (*Jeeva*) and matter (*prakriti*) through the study of the Vedas and ancillary literature. We adopt a consistent philosophy in life, reducing conflict and suffering. We understand the true meaning of Yoga, the purpose and meaning of prayers, values in life and subsequently optimise their benefits.

Through the proper channelling of the vital life force, we develop medha buddhi, i.e. mind power to differentiate between truth and untruth, right and wrong, virtue and vice, to perform our duties and shun irresponsibility, and thus create a conducive environment to ennoble our life and create a better society.

2.39 Aparigraha-sthairya janmakathantāsambodhah

Parigraha means hoarding and *Aparigraha*, non-hoarding.

Parigraha requires that we need time and resources to protect and maintain what we have collected. There is also the fear of loss or theft. Attachment to the collection occupies our thoughts and we are less inclined to be content as we want more-and-more. Hoarding gives way to profiteering and black marketing, causing undue hardships to others …*hinsā* (evil / violence).

Through *aparigraha* we steer clear of collecting unnecessary ideas and things that would end as clutter obstructing physical / material, mental / moral /spiritual and social progress. *Aparigraha* empowers us to satiate our needs and not to succumb to gratify wants: needs are few whereas wants are unlimited. We grow spiritually as we do not limit ourselves to feeding the body but also nourish the soul; knowledge of the subtle takes over and we become more prudent in spending our time, money, physical and mental / emotional energy, and overall resources.

Aparigraha is about *"less wants = less worries & sufferings = increased happiness"*. Our body-mind-spirit goes less-and-less astray to chase ways and means to indulge in consumerism (consuming only for the sake of consumption). We shall not fall prey to greed, extravagance … evil thoughts. We shall have plenty of time and resources to grow in wisdom.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

Bibliography : Satyārtha Prakāsh, Rig Vedādi Bhāshya Bhumikā, *(Maharishi Dayānand Saraswati)*
Yoga Darshanam *(Maharishi Patanjali, Vyāsa Bhāshya & Yogārtha Prakāsh Swami Satyapati Ji Parivrājak)*

GONE TOO EARLY

AYUSHI DOOSHIKA UNUTH
11.04.2002 -- 21.08.2016

It is with great despondency that The DAV College Morcellement St Andre has lost one of its schoolgirls of Form Three Ruby, Ayushi Dooshika Unuth aged 14. She left us at a very early stage of her life of studentship. She died in a fire outbreak at her residence in Triolet.

Her sudden departure has left us with another question about our mission on earth. As mortal we become conditioned and programmed into immediate responses. We flick switches, turn knobs, and something or other comes into action. When a piece of equipment fails to respond, we get annoyed. Again as mortal with a limited life span which button is not in our hands, for a moment we question God whether she deserved such an abrupt parting.

But at another moment we question what went wrong? And we still can't find the answer. The only fact that we may allow us to fathom is that in moment of absolute desolation we can only merge with ourselves and ask God to bestow us with Strength, Patience, and Capacity to endure whatever is written in our fate.

No words will be robust enough to console that mother who lost not only one but two children. What is probably bound to happen is that the mother and all the closed ones will become upset and frustrated, will feel heavy and burdened and will even lose sleep and appetite.

In such a moment of despair we, The School Management Team, the Teaching Staff, The non-Teaching Staff and the students of DAV Morc St Andre join hands, minds and hearts together to convey our deepest sympathy and condolences and a humble pecuniary aid to the aggrieved family.

We would like to end with a poem :

"It broke our hearts to lose you,
But you did not go alone,
A part of us went with you,
The day God took you home,
If tears could built a
stairway,
And heart aches make a lane,
We would walk our way
to heaven and brought
you home again
In life we loved you dearly,
In death we love you still,
In our hearts you hold a place
No one could ever fill"

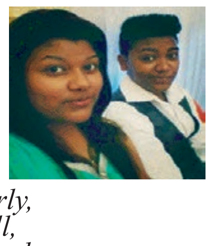

SOURCE : Memorial Poems from Internet

PRACTISING OUR FAITH

Sookraj Bissessur (BA Hons.)

"May we, O Lord, hear with our ears
what is good
May we see with our eyes what is good
And praising you with healthy body and mind
Enjoy the bestowed term of life in dedication to
All that is noble and good".
Rig Veda

Time to celebrate the 'Shravani Upakarma Mahotsav' is also time for us 'Aryans' to transform our spirit to face the future with sound fervour.

THE SPIRITUAL DIMENSION

Regardless of how we identify ourselves with God or choose to call it, our spiritual dimension is there like the other dimensions of human life. There is a sound correlation between the spiritual dimension of a person's life and his aptitude to succeed especially when facing stress and crisis. This is a force or resource which we think as external and yet it is as intimate as our own breath. During this 'Shravani Month' we should emphasize the following in our lifestyle and look forward to entering the next impending future years as bona-fide and better persons.

FERVENT PRAYER

Prayer is an immense privilege to those who believe in God, indeed the greatest spiritual resource. It does not guarantee quick fixes or immediate solutions to the manifold issues of one's daily life. But, it does provide us with a stabilizer and a rudder for our long journey through the turbulences of life.

MEDITATION

Meditation is quite simple and free. It involves a :- Quiet environment – where one can turn off the internal stimuli as well as external distractions.

Mind focus - One has to focus his/her attention "a constant stimulus fixed on gazing at an object, concentrating on a particular feeling or Jāpa or repeating a sound, word, phrase helps to dissuade the intrusion of distracting activities. It normalizes our breathing rhythm.

Comfortable Position – While in meditation we should have a posture where there is no undue physical tension. We should always be regular and systematic with our spiritual practices. This helps to develop an inner harmony.

Reading Scriptures – During this 'Shravani Month' let us be duty-bound to read some pages from the 'Vedas' or the 'Satyārtha Prakash'. Such reading helps the light of wisdom to shimmer and shine; recitation of verses from the Vedas strengthens our will power.

ACTIVE PARTICIPATION IN WORSHIP

When we participate sincerely in 'Hawans' / 'Yajnas' our souls are elevated. 'Yajnas' are not just performed to benefit only an individual, a family, a sect, a caste, or those who follow a particular faith. The aim is universal and the beneficiaries are all living beings.

LISTENING TO BHAJANS / DEVOTIONAL SONGS

This is always soothing and soul elevating. It helps us to overcome mental stress.

FASTING

The benefits of fasting on a regular basis are innumerable. It provides us with increased awareness of our spiritual dimension. It inculcates a strong sense of discipline in our way of life and living style. Faith is powerful because its source is the Almighty God who resides within us. On the occasion of 'Shravani Month' may we realise that we are divine in our being. Our conduct, behaviour and propensity must reveal that implicit faith. A peaceful mind not only benefits us but all those who come into contact with us, spreading hope and optimism in life.

'Shravani' is the festival of knowledge. May God rekindle in our heart the love for the TRUE divine knowledge.